वैदिक सूक्त माला का प्रथम पुष्प

❀ ओ३म् ❀

सर्व प्रकार की श्री–प्राप्ति के निमित्त

卐 वैदिक श्रीसूक्तम् 卐

श्री 卐 लक्ष्मी 卐 धन 卐 ऐश्वर्य की समृद्धि
卐 मेधा 卐 बुद्धि 卐 आयु 卐 आरोग्य प्राप्ति
卐 तथा शुभ दिवस साधनार्थ

प्रस्तोता एवं प्रकाशक—

श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य
वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर–७ (म० प्र०)
[पिन–४५२.००७]

॥ ओ३म् ॥ तेजोऽसि-शुक्रमसि-अमृतमसि-धाम नामासि-प्रियं देवानाम्-अनाधृष्टम्-देवयजनमसि ॥ [यजु० १ । ३१]

ओ३म्

गायत्री तेजोमयी है-परम शुद्ध तथा शीघ्रकारी है-अमृत है-सब धामों में विख्यात है-देवों को अत्यन्त-प्रिय, इष्ट है-अमोघ शक्ति युक्त है और देवों के यजन के लिये है ।

※ गुरु–मन्त्रः ※

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ [यजु० अ० ३६। मं० ३]

[शुद्ध पवित्र होकर नित्य प्रातःसायं सार्थक इस मन्त्र का जप करें। तत्पश्चात् श्रीसूक्त के मन्त्रों का जप-पाठ या हवन करें।]

अर्थ– "परमेश्वर प्राणों का भी प्राण, सर्वदुःख–नाशक और सर्वसुखदाता है। उस सर्वोत्पादक, प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता, सर्वत्र विजय कराने वाले परमात्मा का जो अतिश्रेष्ठ ग्रहण एवं ध्यान करने योग्य, सर्व क्लेशों को भस्म करने वाला, पवित्र, शुद्ध–स्वरूप है, उस को हम धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को उत्तम गुण कर्म स्वभावों में प्रेरित करे।"

※—※

* वैदिक श्रीसूक्तम् *

ओ३म् । वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १ ॥

[यजु० अ० १८ । मं० १]

अर्थ—मेरा अन्न, मेरा ऐश्वर्य, मेरा प्रयत्न, मेरा प्रबन्ध, मेरा ध्यान, मेरी प्रज्ञा, मेरा स्वर, मेरी प्रशंसा, मेरी कीर्त्ति, मेरा श्रुति-ज्ञान, मेरी कान्ति तथा मेरा सुख यज्ञ के द्वारा सुसम्पन्न हों ॥ १ ॥

प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च मऽ आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥

[यजु० अ० १८ । मं० २]

अर्थ—मेरा प्राण, मेरा अपान, मेरा व्यान, मेरे अन्य प्राण, मेरा चित्त, मेरा विचार, मेरी वाणी, मेरा मन, मेरे चक्षु, मेरे श्रोत्र, मेरा चातुर्य और मेरा बल यज्ञ द्वारा सुसम्पन्न हों ॥ २ ॥

ओजश्च मे सहश्च मऽ आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूंषि च मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥३॥

[यजु० अ० १८ । मं० ३]

अर्थ—मेरा ओज, मेरा साहस, मेरा आत्मिक बल, मेरा शरीर, मेरा गृह, मेरा कवच, मेरे अंग, मेरी अस्थियाँ, मेरे जोड़, मेरे शरीरावयव, मेरी आयु, मेरी वृद्धावस्था यज्ञ के द्वारा सुसम्पन्न हों ३ ॥

ज्यैष्ठ्यं च मऽआधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ४ ॥ [यजु० अ० १८ । मं० ४]

अर्थ—मेरा बड़प्पन, मेरा स्वामित्व, मेरा मानस कोप, मेरा क्रोध, मेरे उद्वेग, मेरा सौम्यभाव, मेरी विजय, मेरी महिमा, मेरी उदारता, मेरा विस्तार, मेरा दीर्घजीवन, मेरी वंश-परम्परा, मेरी धनधान्यवृद्धि और समृद्धि यज्ञ के द्वारा सुसम्पन्न हों ॥ ४ ॥

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषम् ॥ ५ ॥ [यजु० अ० ३२ । मं० १३]

अर्थ—अद्भुत गुण, कर्म, स्वभाव वाले, प्रीति के विषय, प्रसन्न करने वाले, सदा प्रसन्न जीव के कमनीय, ब्रह्माण्ड के स्वामी परमेश्वर की उपासना एवं सेवा करके मैं धन एवं उत्तम मेधा की याचना करता हूँ ॥ ५ ॥

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु ॥ ६ ॥ [यजु० ३२ । १४]

अर्थ—हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर ! ऋषि-मुनि आदि विद्वान् गण तथा पालकजन जिस उत्तम बुद्धि वा धन को [illegible]

उपासना करते हैं, उस बुद्धि एवं धन से आज मुझे प्रशंसित बुद्धि एवं धन वाला कीजिये ।। ६ ।।

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे ।। ७ ।।

[यजु० अ० ३२ । मं० १५]

अर्थ—वरणीय परमेश्वर, मुझे शुद्ध बुद्धि एवं धन दें । अग्रनायक तथा प्रजापालक परमेश्वर, मुझे मेधा प्रदान करें । परम ऐश्वर्यशाली तथा सर्वप्रेरक परमेश्वर, मुझे मेधा प्रदान करें । विधाता परमेश्वर, मुझे मेधा एवं धन प्रदान करें [इसी प्रकार को प्रदान करें] ।।७।।

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ।। ८ ।।

[यजु० अ० ३२ । मं० १६]

अर्थ—यह मेरा ब्राह्म बल तथा क्षात्र बल दोनों श्री को प्राप्त

हों । देवगण मुझ में अतिश्रेष्ठ श्री–लक्ष्मी को स्थापित करें । हे

परमेश्वर ! उस तेरी श्री-लक्ष्मी के लिये सत्य, धर्माचरणयुक्त क्रिया करें ॥ ८ ॥

मन॑सः काम॒माकू॑तिं वा॒चः स॒त्यम॑शीय ।

प॒शू॒नाꣳरू॒पमन्न॑स्य॒ रसो॒ यशः॒ श्रीः श्र॑यतां॒ मयि॑ ॥ ९ ॥

[यजु० अ० ३९ । मं० ४]

अर्थ—मन की इच्छा-शक्ति को, प्रेरणा-शक्ति को और वाणी की सत्यता को मैं प्राप्त करूं । पशु-समृद्धि, अन्न का रस, यश और श्री मुझ में स्थिर रहें ॥ ९ ॥

कया॑ नश्चि॒त्र आ भु॑वदू॒ती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑ ।

कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता ॥ १० ॥ [यजु० अ० ३६ । मं० ४]

अर्थ—आश्चर्य गुण, कर्म, स्वभावों से युक्त, पूजनीय परमेश्वर, न जाने किस रक्षण आदि क्रिया से तथा अत्यन्त उत्तम प्रज्ञायुक्त वर्त्तन क्रिया से हमारा सदा वृद्धि करने वाला मित्र हो जाता है जिससे

हम लोग धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने को समर्थ हो सकते हैं ॥ १० ॥

अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम ॥ ११ ॥

[यजु० अ० ५ । मं० ३६]

अर्थ—हे सर्वनेता परमात्मन् ! हम लोगों का ऐश्वर्य एवं सुख के लिये सुपथ से ले चलिये । हे सब ऐश्वर्य एवं सुखों के दाता देव ! आप सारे कर्म और विज्ञानों को जानते हैं । अतः हमसे कुटिल पापों को दूर कीजिये । हम आपके लिये बहुत सी नम्र उक्तियाँ=प्रणाम वचन कहते हैं ॥ ११ ॥

दिवो वा विष्णऽ उत वा पृथिव्या महो वा विष्णऽ उरोरन्तरिक्षात् । उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा ॥ १२ ॥ [यजु० अ० ५ । मं० १९]

अर्थ—हे सर्वव्यापक विष्णु परमेश्वर ! द्युलोक से या पृथिवी-लोक से या महान् एवं विस्तृत अन्तरिक्ष से हमारे दोनों हाथों को दक्षिण पार्श्व से और वाम पार्श्व से धन-ऐश्वर्यों से भर दीजिये। हम आपकी यज्ञ के लिये पूजन-स्तुति करते हैं ॥ १२ ॥

भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर ।
भूरि घेदिन्द्र दित्ससि ॥ १३ ॥ [ऋ० ४ । ३२ । २०]

अर्थ—हे बहुत धन देने वाले ऐश्वर्यवन् ! आप हमको बहुत धन-ऐश्वर्य दीजिये, थोड़ा नहीं, बहुत अधिक अच्छे प्रकार से धनों से हमें परिपूर्ण कर दीजिये। क्योंकि-हे ऐश्वर्यवन् ! आप निश्चय से बहुत अधिक धन ऐश्वर्य देना चाहते हैं ॥ १३ ॥

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ॥१४॥
[ऋ० २ । २१ । ६]

अर्थ—हे महा ऐश्वर्यवन् ! हम लोगों के लिये बल की उस प्रकृति को, जिससे विद्या का अर्जन करते हैं और उत्तम ऐश्वर्य, पुष्टि, धनों, शरीरों की रक्षा, वाणी के बोध, स्वादिष्ट भोग, सुखपूर्वक दिन और धर्मज धनों को धारण कीजिये ।। १४ ।।

भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १५ ॥ [ऋ० १० । १२१ । १०]

अर्थ—हे सच्चिदानन्दस्वरूप, प्रजा के स्वामी ईश्वर ! ये जो सब चराचर भूत हैं, उनका आप से भिन्न कोई अन्य शासक नहीं है । इसलिये जिस कामना को लेकर हम आपकी उपासना करते हैं, वह अभीष्ट हमारे लिये हो, जिससे हम धनैश्वर्यों के स्वामी होवें ।। १५ ।

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं मंऽइषाण सर्वलोकं मंऽइषाण ॥ १६ ॥ [यजु० अ० ३१ । मं० २२]

अर्थ—हे प्रभु ! आप की श्री और लक्ष्मी दो स्त्रियों के तुल्य हैं। दिन रात पार्श्व के समान हैं। नक्षत्र आपके रूप हैं। द्युलोक और पृथिवीलोक आपके विशाल मुख के समान हैं। सो आप मेरे परोक्ष सुख को, जिसकी मैं कामना करता हूँ, उसकी चाहना कीजिये। मेरे लिये सब लोकों के ऐश्वर्य को प्रदान करने की आप इच्छा कीजिये। मेरे लिये अवश्य सब सुखों–ऐश्वर्यों को पहुँचाइये ॥ १६ ॥

* इति वैदिक श्रीसूक्तम् *

—❀—

यह वैदिक श्रीसूक्त-श्री, लक्ष्मी, धन, ऐश्वर्य, मेधा, बुद्धि, आयु, आरोग्यता, समृद्धि, बल, तेज, रक्षा आदि की प्राप्ति, वृद्धि, शुभ दिवस सम्पादन, मंगल कामना, प्रार्थना एवं साधना के लिये अत्यन्त उपयोगी और अनुभूत है। अतः प्रतिदिवस पाठ एवं हवन कार्य के द्वारा यथेच्छ लाभ प्राप्त करना चाहिये।

विशेष ज्ञातव्य—

(१) प्रति दिवस प्रातःकाल शुद्ध पवित्र होकर, उत्तम शुभासन पर पूर्वाभिमुख बैठ कर इस वैदिक श्री सूक्त का एक या अनेक बार जप या पाठ करें। यदि सम्पुट पाठ करना चाहें तो—

(२) संपुट के लिये इस श्री सूक्त के पांचवें से सोलहवें तक १२ मन्त्रों में से किसी भी एक मन्त्र का अथवा क्रमशः प्रत्येक से संपुट पूर्वक आवृत्ति करें। इस प्रकार इन सम्पुट मन्त्रों से १२ आवृत्ति श्री सूक्त की होंगी। गायत्री मन्त्र का भी सम्पुट लगा सकते हैं।

(३) सम्पुट का प्रकार यह है:—जिस मन्त्र से सम्पुट लगाना हो उसको बोलकर श्री सूक्त का मन्त्र प्रारम्भ करे—तत्पश्चात् पुनः

सम्पुट का मन्त्र बोलें। इस प्रकार क्रमशः प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ और पश्चात् सम्पुट मन्त्र बोलें।

(४) वैदिक श्रीसूक्त के इन मन्त्रों से हवन-यज्ञ करते समय प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ में 'ओ३म्' का उच्चारण कर परमैश्वर्य प्रदाता परमात्मा का ध्यान करते हुये मन्त्र बोलें और मन्त्रान्त में "स्वाहा" का उच्च ध्वनि से उच्चारण कर घृत की आहुति प्रज्वलित अग्नि में देवें।

(५) यदि अधिक आहुतियाँ देनी हों, तो इन्हीं मन्त्रों से बार-बार आहुतियाँ प्रदान करें। पूर्व निर्दिष्ट सम्पुट प्रकार से भी आहुतियाँ दे सकते हैं।

(६) यदि नित्य हवन-यज्ञ न कर सकें तो, अमावस्या और पूर्णिमा को हवन अवश्य करें। क्योंकि वेद में इसका बहुत महत्व निम्न प्रकार प्रकट किया है:—

"हे अमृत के वितरित करने वाली अमावस्या, तू निश्चय से पूर्ण है। मुझको भी प्रजा और धनों से पूर्ण कर।—तू दर्श है, दर्शन

का साधन है, सब ओर से अच्छी प्रकार पूर्ण है। मैं भी सब ओर से, सब प्रकार से गौ, अश्व, प्रजा, पशु, गृह और धनादि से परि पूर्ण हो जाऊँ।"

(अथर्ववेद, काण्ड ७, सूक्त ८१, मन्त्र ३, ४)

"सुख एवं धनों की वर्षा कराने वाली अत्यन्त बलवती पूर्णमासी को यज्ञ करें—वह हमें निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होने वाले धनैश्वर्य प्रदान करे।" (अथर्ववेद, काण्ड, ७, सूक्त ७०, मन्त्र २)

(७) अमावस्या और पूर्णिमा को मोहन भोग (हलुआ) से निम्न तीन मन्त्रों से आहुतियां देवें :—

अमावस्या के दिन—

ओ३म् अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥
ओ३म् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥
ओ३म् विष्णवे स्वाहा ॥ ३ ॥

पूर्णमासी के दिन—

ओ३म् अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥
ओ३म् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥
ओ३म् विष्णवे स्वाहा ॥ ३ ॥

परम वेदभक्त, नित्य अग्निहोत्र कर्त्ता, पुण्यात्मा स्वर्गीय

श्री रामाप्रसादजी एवं माता श्रीमती रघुबंशी देवीजी को

पुण्य स्मृति में

उनके सुपुत्र

(१) श्री लक्ष्मीप्रसादजी (२) श्री राधाप्रसादजी एवं (३) श्री गौरीशंकरजी गुप्त

फर्म— **श्री रामाप्रसाद लक्ष्मीप्रसाद, पो० गढ़वा (पलामू-बिहार)**

(हर प्रकार की लकड़ी, बांस, कोयला के ठेकेदार एवं विक्रेता)

ने श्री सूक्त चतुर्थ एवं पंचम संस्करणों तथा वैदिक सरस्वती सूक्त के मुद्रण का व्यय सात्विक रूप से वहन किया है अतः इन तीनों बन्धुओं का हार्दिक धन्यवाद ।

(पंचम संस्करण ५ सहस्र प्रति)

दयानन्द बोधोत्सव पर्व

दयानन्दाब्द १५३

निवेदक—
वीरसेन वेदश्रमी

वेद सदन
महारानी पथ
इन्दोर-७ [पिन-४५२००७]

दिनांक १६ फरवरी १९७७
महाशिवरात्रि पर्व सं० २०३३ वि०

मुद्रक—वैदिक यन्त्रालय केसरगंज अजमेर । [पिन-३०५००१]